९|३

नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन।
न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः।।१८।।

न=नहीं है; **एव**=निःसन्देह; **तस्य**=उसका; **कृतेन**=कर्तव्य करने से; **अर्थः**=प्रयोजन; **न**=नहीं; **अकृतेन**=न करने से; **इह**=इस संसार में; **कश्चन**=कुछ भी; **न**=नहीं; **च**=तथा; **अस्य**=उसका; **सर्वभूतेषु**=समस्त प्राणियों में; **कश्चित्**=कोई; **अर्थ**=स्वार्थ का; **व्यपाश्रयः**=आश्रय।

अनुवाद

स्वरूपज्ञानी महानुभाव के लिए स्वधर्म के आचरण में कोई स्वार्थ नहीं रहता, और कर्म न करने का भी उसके लिए कोई कारण नहीं होता। किसी अन्य प्राणी की आश्रयता भी उसे अपेक्षित नहीं रहती।।१८।।

तात्पर्य

स्वरूप को प्राप्त हुए महानुभाव के लिए कृष्णभावनाभावित कर्म के अतिरिक्त अन्य किसी भी कर्तव्य का सम्पादन शेष नहीं रहता। कृष्णभावनामृत निष्क्रिय जड़ता नहीं है, यह अनुवर्ती श्लोकों से स्पष्ट हो जायगा। कृष्णभावनाभावित पुरुष मानव अथवा देवता आदि किसी भी अन्य प्राणी का आश्रय नहीं लेता। वह जो कुछ भी कृष्णभावनाभावित कर्म करता है, वही उसकी कृतकृत्यता के लिए पर्याप्त है।

९|७

तस्मादसक्त: सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः।।१९।।

तस्मात्=इसलिए; **असक्तः**=अनासक्त भाव से; **सततम्**=निरन्तर; **कार्यम्**=कर्तव्य समझ कर; **कर्म**=कर्म; **समाचर**=भलीभाँति कर; **असक्तः**=अनासक्त; **हि**=निःसन्देह; **आचरन्**=करने से; **कर्म**=कर्म; **परम्**=परब्रह्म को; **आप्नोति**=प्राप्त होता है; **पूरुषः**=मनुष्य।

अनुवाद

इसलिए कर्मफल में अनासक्त भाव से कर्तव्य की भाँति कर्म करना चाहिए क्योंकि अनासक्त होकर कर्म परम लक्ष्य की प्राप्ति कराने वाला है।।१९।।

तात्पर्य

भक्तों के लिए 'परमलक्ष्य' भगवान् श्रीकृष्ण हैं तथा निर्विशेषवादियों के लिए मुक्ति है। अतएव जो पुरुष सद्गुरु के मार्गदर्शन में फलासक्ति के बिना श्रीकृष्ण की प्रीति के लिए, अर्थात् कृष्णभावनाभावित कर्म करता है, वह जीवन के परमलक्ष्य की दिशा में निस्सन्देह प्रगति करता है। अर्जुन से कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्ण के प्रीत्यर्थ युद्ध करने को कहा गया है, क्योंकि श्रीकृष्ण की ऐसी ही इच्छा है। पुण्यात्मा अथवा अहिंसक होना भी एक प्रकार की वैयक्तिक आसक्ति है। वस्तुतः भगवान् श्रीकृष्ण के लिए कर्म करना ही फलासक्ति से रहित कर्मयोग है। भगवान् श्रीकृष्ण ने इसी को परमोच्च कर्मसिद्धि कहा है। नियत यज्ञों के समान वैदिककर्म भी इन्द्रियतृप्ति में बने पापों की